International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 81-84

बाल विशिष्ट समाचार–पत्रों का समावेशन के दृष्टिकोण से विश्लेषण

शिवांगी

एम.फिल. शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में बच्चों के लिए विशेष रुप से प्रकाशित समाचार–पत्रों का विश्लेषण किया गया। चूंकि मीडिया को बच्चों के सामाजीकरण का एक सशक्त माध्यम माना जाता है अतः बालविशिष्ट अखबारों की विषयवस्तु एवं चित्रों के स्वरुप को समझना एवं बच्चों के लिए उनकी प्रासंगिता को परखना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था। प्रस्तुत अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि समाचार–पत्रों की विषयवस्तु एंव चित्रों का स्वरुप किस प्रकार का है? उनमें किसी वर्ग, समूह व जेंडर विशेष के प्रति कहीं कोई विशेष आग्रह या पूर्वाग्रह उपस्थित है अथवा नहीं। उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श के आधार पर तीन प्रमुख हिन्दी अखबारों हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स व जनसत्ता से बच्चों के लिए विशेष रुप से प्रकाशित 'नंदन', 'फ्यूचर्स स्टार', व 'नन्ही दुनिया' नामक खंडों को चुना गया। अंतर्वस्तु विश्लेषण करते समय अखबारों में भाषा, कहानी, चित्र, मनोरजंन विज्ञापन आदि कुछ थीम्स उभरकर आयी जिनके आधार पर तालिकाओं का निर्माण कर प्रत्येक अखबार मे इन थीम्स की स्थिति को समझने का प्रयास किया गया।

मूल शब्द: बालविशिष्ट, स्माचार.पत्र

प्रस्तावना

आधुनिक युग में निरंतर नई–नई घटनाएँ घटती रहती है। सूचनाएँ आधुनिक मनुष्य के लिए ज्ञान का स्रोत ही नहीं शक्ति का भी स्रोत है। इसीलिए अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं की सूचना प्राप्त करना आधुनिक मनुष्य की एक अनिवार्य जरूरत बन गई है। ऐसी स्थिति में जनसंचार साधनों का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। जनसंचार साधनों में समाचार–पत्र एक मुद्रित दृश्य माध्यम है जिसका प्रकाशन एक नियत समय पर होता है। भारतीय समाज में जैसे–जैसे शिक्षा का प्रचार बढ़ता गया वैसे–वैसे समचार–पत्रों की लोकप्रियता में भी वृद्धि होती गयी है। आज समाचार–पत्र, सूचना व सम्प्रेषण का सशक्त व विश्वनीय माध्यम माने जाते हैं।

समाचार–पत्र एवं बच्चे

समाचार–पत्र संचार का एक ऐसा माध्यम है जिसने समाज में उपस्थित अलग–अलग वर्गों व समूह के लोगों तक अपनी पहुँच बनाई यही कारण है कि अब हमें समाचार–पत्रों के पाठकों में भिन्न–भिन्न जेंडर, आयु व वर्ग के लोग नजर आते हैं। आज समाचार–पत्र केवल वयस्कों के द्वारा ही नहीं पढ़े जाते बल्कि बच्चे भी उनके सक्रिय पाठक माने जाते हैं। मुकेश मानस (2006) के अनुसार 'घरों में रोजना आने वाले समाचार–पत्र केवल बड़े ही नहीं पढ़ते बच्चे भी उन्हें उलटते पुलटते हैं। बच्चे समाचार–पत्रों के भविष्य में विकसित होने वाले पाठक होते हैं।' बाल पाठकों की इसी अच्छी खासी संख्या को देखते हुए कुछ समाचार–पत्र बाल विशिष्ट समाचार–पत्रों का प्रकाशन करते हैं। आजकल बड़े समाचार–पत्र जैसे हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता व राष्ट्रीय सहारा आदि सप्ताह में एकत्रित बाल सामग्री से सम्बन्धित एक पूरा पृष्ठ छापते हैं। जिसमें बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री प्रकाशित होती है। एक प्रभावशाली जनसंचार माध्यम होने के नाते समाचार–पत्रों की यह जरूरत हैं कि वे अपने विशिष्ट पाठक वर्ग के लिए उम्र व जरूरत के हिसाब से प्रासंगिक जानकारी प्रकाशित करें। अतः इन समाचार पत्रों में बच्चों की आयु व मानसिक स्तर के अनुरूप विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे– मनोरंजन, समसामयिक सूचना खेल व शिक्षा से जुड़ी सामग्री का प्रकाशन किया जाता है जिसका बच्चों के ज्ञानवर्द्धन व कल्पनाशीलता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अध्ययन की तार्किकता

शिक्षा एक वृहद् अवधारणा है जिसमें सदैव नवीन व व्यापक साधनों के प्रयोग की संभावना बनी रहती है। समाचार–पत्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा के साधन के रूप में उभरते हैं। बालविशिष्ट समाचार पत्र विभिन्न मुद्दों, घटनाओं व जीवन के विविध पहलुओं से सम्बन्धित ज्ञान को बच्चों तक पहुँचाते हैं एवं उनके बौद्धिक विकास में सहायक होते हैं बालोपयोगी समाचार–पत्रों में ऐसी सामग्री होती है जो बच्चों में जिज्ञासा व कौतूहल उत्पन्न करती है। वे अपने चारों और के वातावरण एवं समसामयिक घटनाओं के बारे में जान पाते हैं। समाचार–पत्रों में सांस्कृतिक, समसामयिक व ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध होती है जिसका प्रयोग शिक्षण–अधिगम प्रणाली में अध्यापक व विद्यार्थी दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। बाल विशिष्ट समाचार–पत्र बच्चों को किताबों के अतिरिक्त एक विकल्प प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से वे चीजों को देखने समझने व जानने का प्रयास कर सकते हैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धान्त में भी ज्ञान को बाहरी जगत से जोड़ने की बात कही गई है – "ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ना, पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को चहुमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाएँ बजाय इसके कि वह पाठ्य पुस्तक केन्द्रित बन जाए।" (पृष्ठ 5, 6)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 की इस अनुशंसा से समाचार पत्रों के महत्त्व पर रोशनी पड़ती है। समाचार–पत्र बच्चों के परिवेश में घटने वाली घटनाओं व उनके जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिससे बच्चों को विविध विषयों पर अपनी मौलिक राय बनाने में मदद मिलती हैं और वे अधिक सजग रूप से अपने आस–पास के वातावरण से जुड़ सकते हैं।

बालोपयोगी समाचार–पत्रों का बच्चों के ज्ञान, कौशलों व अभिवृत्तियों पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है मंजूर (2006) के अनुसार

'प्रिंट मीडिया में प्रकाशित विभिन्न गतिविधियाँ बच्चों द्वारा सीखें गये कौशलों को व्यवहार में लाने में मदद करती है। साथ ही उनमें ऐसी सामाजिक क्षमताओं का विकास करती है जिससे वे दूसरों की विभिन्नताओं को स्वीकार कर सकें।' ऐसी कुछ मान्यता टण्डन (1981) भी रखती है उनके अनुसार 'जनसंचार के माध्यम से सामाजीकरण के महत्त्वपूर्ण साधन होते हैं एवं बच्चों के सामाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनसंचार माध्यम यह कार्य भले ही सीधे तौर पर नहीं करते हैं परंतु उनकी विषय–वस्तु परोक्ष रूप से यह कार्य करती है। जनसंचार माध्यम व्यक्ति को पदानुक्रम, मूल्यों एवं विभिन्न संस्थाओं के द्वारा किये जाने वाले कार्यों के विषय में जानकारी प्रदान करते हैं एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक मूल्यों, आदर्शों व पूर्वाग्रहों का परिवर्हन बच्चों में करते हैं।' समाचार–पत्रों में यह परिवर्हन चित्रों, भाषा व विषयवस्तु के माध्यम से हो सकता है।

समाचार–पत्रों के बच्चों के सामाजीकरण व शिक्षण अधिगम में इन्हीं उपयोगों को देखते हुए बालोपयोगी समाचार–पत्रों की विषयवस्तु को समावेशन के दृष्टिकोण से विश्लेषित करने का विचार मेरे मन में आया साथ ही कुछ प्रश्न भी उठे जिन पर विचार करने के लिए इस शोध के उद्देश्य तय किये गये।

शोध प्रश्न

- चित्रों व विज्ञापनों का स्वरूप कैसा है यह जानना?
- बालविशिष्ट समाचार–पत्रों की विषयवस्तु प्रत्येक वर्ग वजेंडर के बच्चों के लिए प्रासंगिक है या नहीं यह जानना?
- इन समाचार–पत्रों की विषयवस्तु में किन विषयों को स्थान दिया गया है यह समझना?
- क्या समाचार–पत्रों की विषयवस्तु किसी वर्ग, समूह व जेंडर विशेष के प्रति पूर्वाग्रहों या आग्रहों से ग्रसित है या नहीं यह जानना?

शोध प्रारूप

इस अध्ययन में शोध–प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए गुणात्मक शोध प्रारूप को

अपनाया गया है। गुणात्मक विश्लेषण से तात्पर्य व्यवस्थित सामग्री में से निहित तथ्यों की खोज से है। प्रस्तुत अध्ययन में अन्तर्वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है जिसके आधार पर इन समाचार–पत्रों की भाषा एवं विषयवस्तु को विश्लेषित किया गया है किप्रेनडार्प (1980) के अनुसार – 'अंतर्वस्तु विश्लेषण अन्तर्निहित तथ्यों को समझने, सार्वजनिक व्यवहार व सामाजिक संबंधों को जानने एवं संस्थागत वस्तु स्थिति को समझाने में सहायक होता है।' समाचार–पत्र एक सार्वजनिक संचार माध्यम है अतः शोध प्रश्नों व उद्देश्यों को देखते हुए अंतर्वस्तु विश्लेषण को चुना गया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श के रूप में तीन हिन्दी सभाचार–पत्रों 'हिन्दुस्तान', 'नवभारत टाइम्स' व 'जनसत्ता' से क्रमशः 'नंदन', 'फ्यूचर्स स्टार' व 'नन्ही दुनिया' को प्रतिदर्श के रूप में से चुना गया। बालोपयोगी समाचार–पत्रों की उपलब्धता को देखते हुए प्रतिदर्श का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया। प्रत्येक अखबार से दस–दस बालोपयोगी समाचार–पत्रों का चयन किया गया।

अंतर्वस्तु विश्लेषण

किसी भी अध्ययन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान विश्लेषण का होता है। इस अध्ययन में तीन प्रमुख हिन्दी अखबारों के दस–दस अकों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया। विश्लेषण करते समय भाषा, साहित्य, जनसंचार व समाजशास्त्र आधारित परिप्रेक्ष्यों का सहारा लिया गया एवं इन परिप्रेक्ष्यों के आधार पर बालविशिष्ट समाचार–पत्रों की विषयवस्तु में सामाजिक भाषाई समावेशन व विविधता से सम्बन्धित मुद्दों को किस प्रकार व किस हद तक शामिल किया गया है यह जानने का प्रयास किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन करने के पश्चात विषयवस्तु के स्वरूप को देखते हुए विश्लेषण करने के लिए वर्ग, जेंडर भाषा, बालसहभागिता एवं विविधता नामक थीम्स का निर्माण किया गया। ये सभी थीम्स समावेशन व बर्हिवेशन के विमर्श के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है एवं सामाजिक ढांचे में उपलब्ध विविधता, स्तरण भेदों व पूर्वाग्रहों की सही समझ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन थीम्स के आधार पर कहानी, गीत, चित्र, भाषा व विज्ञान आदि तालिकाओं का निर्माण व श्रेणीकरण किया गया जिससे सम्पूर्ण विषय की एक सारगर्भित समझ विकसित हो सके। प्रत्येक सब थीम की अंतर्वस्तु व भाषा का विश्लेषण करने के पश्चात उसमें उपलब्ध तत्वों की मुख्यता के आधार पर उसे किसी मुख्य थीम के अंर्तगत रखा गया और समावेशन के दृष्टिकोण से ये समाचार–पत्र कितना खरा उतरते हैं यह जानने का प्रयास किया गया। जिसका वर्णन निम्न प्रकार है –

वर्ग

सामाजिक संरचना एवं ढांचे को समझने के लिए वर्ग एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जिसके आधार पर सामाजिक स्तरण व विविधता का अवलोकन किया जा सकता है। समाचार–पत्र विभिन्न सूचनाओं को हम तक पहुँचाने के साथ–साथ अपनी विषयवस्तु में ना केवल सामाजिक मुद्दों को प्रदर्शित करते हैं बल्कि सामाजिक विद्रूपताओं के प्रति आम व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने की भी क्षमता रखते हैं। ऐसी स्थिति में वर्ग आधारित विभेदों व पूर्वा ग्रहों को समझने, कम करने या बढ़ाने में बालोपयोगी समाचार–पत्र किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं यह जानना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

वर्ग के दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर इन समाचार–पत्रों को विषयवस्तु, चित्रों, भाषा एवं विज्ञापन के केन्द्र में मध्यम व उच्चवर्ग दिखाई पड़ता है। समाचार–पत्रों की विषयवस्तु से लेकर भाषा, चित्र व विज्ञापन सभी मध्यम वर्ग को टारगेट करते नजर आते हैं। जनसंचार के माध्यम से होने के कारण बालोपयोगी समाचार–पत्रों में बड़ी संख्या में मध्यवर्गीय पाठकों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन छापे गये हैं। विज्ञापनों में मुख्यतः आभूषणों सिनेमा, ब्रांडेड कपड़ों व जूतों, महंगे वाहनों, घर के समान व टूर व ट्रैवल्स के विज्ञापन है जिनमें सबसे अधिक प्रतिशतः आभूषणों के विज्ञापनों का है जो स्पष्ट रूप से उच्च मध्य वर्ग के प्रति अखबार के आग्रह को प्रदर्शित करता है। विज्ञापन सहित अन्य चित्रों में भी उच्च मध्यम वर्ग के बच्चों के चित्रों की प्रमुखता है जो महंगे कपड़ों व खिलौनों से लैश है। जन संचार माध्यम होने के पश्चात भी इन समाचार–पत्रों में विविध आर्थिक व सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों को स्थान नहीं दिया गया है केवल मध्यवर्गीय या उच्च मध्यवर्गीय बच्चे ही केन्द्र में दिखाई देते हैं। समाचार–पत्रों में प्रकाशित सामान्य ज्ञान मुख्य स्थान विज्ञान व तकनीक से सम्बन्धित जानकारी को दिया गया है जिसमें अधिकतर जानकारी बाजार में उपलब्ध, महंगे कम्प्यूटर, मोबाइल, वीडियो गेम्स व ऐप्स से संबंधित है जिस तक एक निम्न मध्यवर्गीय बच्चे की पहुँच हो पाना मुश्किल प्रतीत होता है। कहानियों में भी वर्ग की अवधारणा परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से उभरकर सामने आती है अधिकतर कहानियाँ अकबर–बीरबल, तेनालीराम व पंचतंत्र की है जिनके मुख्य पात्र आम व्यक्ति न होकर राजा या राजदरबार से सम्बन्धित व्यक्ति है। हालांकि जनसत्ता व हिन्दुस्तान में एक–दो ऐसी कहानी भी छपी है

जिनमें एक आम व्यक्ति के जीवन को केन्द्र में रखा गया है लेकिन इनका प्रतिशत बहुत कम है। सभी वर्गों की एक समान सक्रिय भागीदारी की ये समाचार–पत्र अवेहलना करते नजर आते हैं। यही नहीं कुछ अंकों में प्रकाशित हास्य–व्यंग्य से सम्बन्धी सामग्री में विशिष्ट समूहों एवं वर्गों के प्रति पहले से चली आ रही रूढ़िवादी सोच को पोषण मिलता नजर आता है। इन अखबारों में कुछ विशेष सामाजिक वर्गों से सम्बन्धित चुटकले अखबार में छापे गये हैं जो इन वर्गों से सम्बन्धित सामाजिक पूर्वाग्रहों को प्रदर्शित करते हैं।

जेंडर

बालोपयोगी समाचार–पत्रों में जेंडर के दृष्टिकोण से देखने पर एक ऊपरी संतुलन नजर आता है। इन अखबारों की विषयवस्तु केवल स्त्री व पुरुष पात्र ही मुख्य या गौण रूप से उपलब्ध अन्य किसी जेंडर की कोई भूमिका नहीं है। मौटे तौर पर देखने पर स्त्री–पात्रों का प्रतिनिधित्व नजर आता है इन अखबारों में प्रकाशित 27 कहानियों में केवल तीन कहानियों में स्त्री–पात्रों को मुख्य रूप में प्रस्तुत किया गया है अन्य सभी कहानियों में उनकी भूमिका गौण है। गौण भूमिका में भी स्त्री पात्रों को पारम्परिक कार्यों एवं पेशों में संलग्न दिखाया गया है। स्त्री पात्रों को या तो बच्चों से प्रेम करने वाली माँ व आदर्श दादी की भूमिका में या फैशनेबल व मेकअप पर ध्यान देने वाली आंटी के रूप में या कम दिमाग नर्स व चुडैल की रूप में दिखाया गया। महिलाओं का ऐसा चित्रण स्त्रियों की छवि को या तो अत्यधिक सकारात्मक व आदर्श रूप में प्रस्तुत करता है या नकारात्मक रूप में बच्चों के समूह महिलाओं की एक संतुलित छवि प्रस्तुत करने में अखबार नाकाम रहे हैं। अखबार में प्रकाशित कहानियाँ में कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें स्त्री पात्र का कहानी के अंत में प्रवेश होता है वहीं कुछ कहानियाँ ऐसी भी है जिनमें स्त्री पात्र प्रारम्भ से ही उपस्थित है परंतु कहानी में उनका एक भी संवाद नहीं है वह केवल मूकरूप से उपस्थित है उनकी कोई सक्रिय भूमिका नहीं है। कहानियों के अतिरिक्त चित्रों में भी जेंडर का विश्लेषण किया गया है। चूंकि चित्र सम्प्रेषण का एक महत्त्वपूर्ण साधन होते हैं एवं उनका पाठकों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है अतः इस अध्ययन में चित्रों के माध्यम से भी जेंडर के प्रश्न को समझने का प्रयास किया गया है अखबारों में प्रदर्शित चित्रों में कुछ चित्र ऐसे हैं जिनमें महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व तो प्राप्त हुआ है लेकिन उनमें उनकी पूर्वाग्रहों से ग्रसित व रूढ़िवादी छवि को प्रस्तुत किया गया है जैसे विज्ञापन के चित्रों में महिलाओं को केवल आभूषण सम्बन्धी चित्रों में मुख्य रूप से दिखाया गया अन्य चित्रों में उनकी भूमिका उपेक्षित है। इसी तरह साइंस वाली सु दी नामक कॉलम में महिला का अत्याधिक फैशनेबल अवतार में प्रदर्शित चित्र है वह साहसी सौरभ नामक कहानी में प्रदर्शित चुडैल का चित्र लिंग आधारित विभेदों व पूर्वाग्रहों को पोषित करता नजर आता है।

बाल सहभागिता

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख विषय बालविशिष्ट समाचार–पत्र है अतः इस अध्ययन में इन समाचार–पत्रों की विषयवस्तु के विश्लेषण के साथ–साथ इनमें बच्चों की सहभागिता के स्वरूप को भी जानने का प्रयास किया गया है। बाल समाचार–पत्र जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है बच्चों को ध्यान में रखकर लिखे जाने वाले अखबार है जिनके पाठक मुख्य रूप से बच्चे होते हैं। इस अध्ययन में प्रस्तुत तीनों समाचार–पत्र इस संकल्पना से भली–भाँति परिचित है एवं सभी समाचार–पत्रों में बच्चों की रुचि, मनोरंजन, शिक्षा व सामान्य–ज्ञान संबंधी जानकारी को स्थान दिया गया है, व विभिन्न प्रकार के चित्रों, खेल–पहेलियों एवं क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों की कुछ न कुछ सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है, हालांकि गहराई से देखने पर ज्ञात होता है कि साहित्यिक विधाओं जैसे– कहानी, कविताओं व खेलगीतों में बच्चों की आकांक्षाओं, अभिलाषाओं व बालसुलभ व्यवहारों का प्रदर्शन कम हुआ है, अधिकतर साहित्य व्यस्कों के दृष्टिकोण से लिखा गया है जिनके अधिकतर पात्र बालक न होकर बड़े लोग हैं। पंचतंत्र, तेनालीराम व अकबर बीरबल की कहानियों में विशेष रूप से बच्चों के लिए कोई स्थान नहीं है। यही नहीं इन अखबारों में प्रकाशित साहित्य मुख्य रूप से उपदेशात्मक व मूल्यपरक शैली में लिखा गया है जिसकी वाक्य रचना व शब्दावली कृत्रिम है इसमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं है साथ ही बच्चों की सोच व भावनाएँ भी इस साहित्य में नहीं झलकती है यह व्यस्कों की अपेक्षाओं को दर्शाते नजर आता है। बालखंड होने के बावजूद इन अखबारों में बड़ी संख्या में विज्ञापनों को प्रकाशित किया गया है जिनमें से अधिकतर विज्ञापन बाल पाठक वर्ग के लिए प्रासंगिक नहीं लगते हैं। अखबार में प्रकाशित इन विज्ञापनों का बच्चों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक और तो ये बच्चों का सामाजीकरण उपभोक्तावादी संस्कृति में करते हैं वही दूसरी और अखबार में बच्चों के लिए निर्धारित निश्चित जगह को भी हड़प लेते हैं।

विविधता की संकल्पना

इन अखबारों में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व भौगोलिक जानकारी को प्रमुखता दी गई है। विभिन्न क्षेत्रों, समूहों व वर्गों से सम्बन्धी खेल, उत्सवों, लोक–संस्कृति व विशिष्ट आकर्षणों को अखबार के प्रथम पन्नों पर प्रमुखता से छापा गया है। अखबार में विभिन्न रिपोर्टों व लेखों के माध्यम से न केवल सामाजिक व सांस्कृतिक विविधता के विषय में जानकारी दी गई है वरन् पर्यावरण संतुलन व भौगोलिक विविधता से संबंधी जानकारी को भी विषय–वस्तु में उचित स्थान दिया गया है। कहानियों में सामाजिक सौहार्द व सहिष्णुता पर कोरी शिक्षा न देते हुए विभिन्न पात्रों को अपने धर्म से इतर त्यौहारों जैसे दीपावली, गुरुपर्व व क्रिसमस मनाते हुए दिखाया गया है। इस तरह के प्रयासों से बच्चों में सामाजिक व सांस्कृतिक विविधता के प्रति एक सकारात्मक सोच का विकास होता है और उनमें विविधता व समावेशन सम्बन्धी विभिन्न अवधारणों को सैद्धान्तिक के साथ व्यवहारिक स्तर पर भी स्वीकार करने की क्षमता विकसित होती है।

निष्कर्ष

बालविशिष्ट समाचार–पत्रों में बच्चों के लिए विभिन्न विषयों से सम्बन्धित जानकारी प्रकाशित की जाती है। यद्यपि जानकारी का स्वरूप अधिकांशतः सूचनात्मक व तथ्यात्मक होता है तथापि यह जानकारी बच्चों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है क्योंकि सूचना ज्ञान की दिशा में पहला कदम है। इन समाचार–पत्रों को विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि अखबारों में ऐसी सामग्री का अभाव है जो बच्चों को निष्क्रिय भूमिका से बाहर निकालकर उनकी एक सक्रिय भागीदारी तय कर सके। समाचार–पत्रों का उद्देश्य केवल बच्चों का मनोरंजन व जानकारी प्रदान ही नहीं होना चाहिए बल्कि बच्चों की कल्पनाशीलता एवं कौशलों का विकास भी होना चाहिए और यह तभी संभव है जब बच्चों की समाचार–पत्रों में सक्रिय भागीदारी तय हो। बच्चों के अखबारों में विषयवस्तु के चयन को लेकर सतर्कता बरतनी चाहिए क्योंकि अखबार पाठकों के विचारों और उनकी सोच को प्रभावित करते हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सामाजिक पूर्वाग्रहों, विभेदों, मूल्यों का परिवर्हन करने के सशक्त माध्यम के रूप में उभरते हैं। अगर थोड़ी सजगता के साथ बाल

पत्रों का प्रकाशन किया जाए तो शिक्षण अधिगम व समावेशन से जड़े मुद्दों पर समझ बनाने में ये अखबार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन.सी.ई.आर.टी. (2006). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.
2. क्रिपेनड्रा, कॉलास (1980). *कन्टेन्ट एनालिसिस : एन इन्ट्रोडेक्शन टू इट्स मेथेडलॉजी.* लंदन : सेज पब्लिकेशन.
3. 'जनसत्ता' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.
4. 'नवभारत टाइम्स' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.
5. मंजूर, तवा कोली (2013). दि ऐफेक्ट ऑफ यूजिंग प्रिंट मीडिया आन चिल्ड्रेन एल टू लिटरेजी डेवलपमेंट : ए लॉगटि्टूड स्टडी. *जर्नल ऑफ लैग्वेज टीचिंग एण्ड रिसर्च,* वाल्यूम–4, अंक–4. (पृष्ठ 570–578)
6. मानस, मुकेश (2006). *मीडिया लेखन,* सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन.
7. 'हिन्दुस्तान' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.